Research Journal of Language, Literature and Humanities
Vol. **1(1),** 2-3, January **(2014)** *Res. J. Language, Literature and Humanities*

संत परंपरा में राष्ट्रीय चेतना का उद्‌भव

कान्ति पचौरी
रसायन शास्त्र विभाग, शासकीय निर्भय सिंह पटेल विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर, मप्र, भारत

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received 9th January 2014, revised 12th January 2014, accepted 18th January 2014

Abstract

भक्ति आंदोलन भारतीय इतिहास में केवल एक धार्मिक घटना नहीं थी। इस आंदोलन को संतों और विद्वानों ने सामाजिक जागरण और चेतना का आधार बनाया। सामाजिक कुरीतियों, धर्मान्धता और अशिक्षा के अंधकार से निकालकर समाज को एक मानवीय और मूल्यगत संस्कार देने में भक्ति आंदोलन का महत्वपूर्ण स्थान है। संत कबीर, तुकाराम, नानक, रैदास सहित दक्षिण भारत के कवियों और संतों ने जिस सामाजिक जागृति का अलख अपने साहित्य, संगीत को भक्ति के रंग में रंगकर परिवर्तन की अलख जगाई, वह अद्‌भूत घटना रही है। मुगल काल के अत्याचार, दमन, लूटपाट, हिंसा, शोषण, गुलाम प्रथा, नारी उत्पीड़न आदि अमानवीय कुरीतियों में जकड़े भारतीय जनमानस को उसके मूल सांस्कृतिक और वैदिक मूल्यों से जोड़कर उसे यथा अर्थों में मानव रूप में स्थापित करने में इन मनीषियों का योगदान अतुलनीय है। संत तुकाराम ने महाराष्ट्र में अपने अभंग से जो ज्ञान और चेतना का प्रकाश जगाया वह अद्वतीय है। इसी प्रकार गुरूनानक ने अपनी वाणी से जो सरल और सुबोध शैली में जागृति उत्पन्न की उसने न केवल भारतीय अस्मिता का संरक्षण किया वरन सामाजिक एकता को भी मजबूत करने में योगदान दिया। तुलसी, सूर, कबीर, रसखान आदि संतो, सुफीयों और कवियों ने एकता और भाईचारे की कड़ियाँ जोड़ी जिसने आगे चलकर स्वतंत्रता आंदोलन को भी ऊर्जा दी। स्वामी रामकृष्ण, विवेकानंद, दयानंद सरस्वती से लेकर अब तक मुरली बापू जैसे क्रांतिकारी भक्तों ने समाज को नई चेतना, चिंतन और ऊर्जा से आलोकित किया है। गुलामी के संताप से झुलसे भारतीय जनमानस पर इन क्रांतिकारी भक्तों की वाणी अमृत बनकर बरसी जिसने अंधकार और अज्ञान के आवरण को दूर कर भारतीय अस्मिता को प्रकाशित किया। ऐसे ज्वाजल्यमान नक्षत्रों से न केवल इतिहास और साहित्य गौरवांवित हुआ है बल्कि भारतीय संस्कृति की सूखती धारा नवजीवन प्रकार सारे विश्व में अपनी कीर्ति स्थापित करने में सफल रही है। यही धारा अब तक गतिमान है और हमेशा रहेगी जिसमें हमारे पूज्य संतों, सूफीयों और विद्वान मनीषियों का दर्शन समय–समय पर निराशा के अंधकार में आशा की ज्योति प्रज्जवलित रखता है।

Keywords: संत, परंपरा, राष्ट्रीय चेतना, उद्‌भव

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में मुगल काल सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से परिवर्तन का संक्रमण काल रहा है। जहाँ एक ओर मुगलों के पदार्पण से भारत में धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण केन्द्रों का विघटन हुआ वहीं मुगल संस्कृति और सूफीवाद ने भारतीय परंपरा और कला पर विशेष रूप से अपना प्रभाव अंकित किया। मुगल आक्रमणकारियों की बर्बरता, हिंसा और लूटपाट के बीच ही, वह जागृति उत्पन्न हुई जिससे समाज में कबीर, नानक, तुलसी, एकनाथ, तुकाराम, दयानन्द सरस्वती जैसी विभूतियों का प्रार्दुभाव हुआ। भय और आतंक से दबे हुए समाज में अशिक्षा, अज्ञान और कुरीतियों ने जन्म लिया जिसका निराकरण करने के लिए अनेक मनीषियों, संतों और समाज सुधारकों ने समाज को ऊर्जा और प्रकाश देकर पतन के गर्त में गिरने से बचाया। ऐसे समय में जब लूटपाट, बलत, धर्म परिवर्तन, आतंक और हिंसा, लगातार आक्रमणों से भारतीय अस्मिता, आताताईयों द्वारा रौंदी जा रही थी तब भारत में एक नई जागृति की लहर भी उत्पन्न हुई जिसमें अनेक संतों और मनीषियों ने समाज का नया नेतृत्व और दिशा दी।

भारतीय संत केवल आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टि तक ही सीमित नहीं रहे है। देश और समाज की समसामयिक व्यवस्थाओं और परिस्थितियों पर उन्होंने अपने वाणी और कर्म से जागृति का प्रकाश फैलाया। स्वामी रामदेव समर्थ, स्वामी विवेकानंद, तुलसीदास, सूर, कबीर, दयानंद सरस्वती आदि संतों ने अपने साहित्य के द्वारा समाज कल्याण और राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने के उत्कृष्ट कार्य किये। संत कबीर अपने समकालीन मनीषियों में सर्वाधिक प्रभावशील और प्रेरक रहे जिन्होंने अपनी वाणी से समाज में प्रगति और ज्ञान की नई ज्योति प्रज्जवलित की।

राष्ट्रीय चेतना की इस कल्याणकारी परंपरा को फिर महाराष्ट्र में संत तुकाराम, एकनाथ आदि संतो के अभांगों ने राष्ट्र और समाज को एकजुट होने की प्रेरणा दी। स्वामी दयानंद सरस्वती इसी कड़ी के क्रांतिकारी व्यक्तित्व हुए जिन्होंने पाखंड और धर्मान्धिता के प्रति समाज को जागरूक करने में एक ईश्वरवाद का सिद्धांत प्रतिपादित करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर जन–जागृति का मंत्र फूँका। अशिक्षा, अज्ञान, कुरीतियों, सती प्रथा आदि तद् समय की बुराईयों पर उन्होंने अपने उद्‌बोधन द्वारा नई चेतना जागृत की जो बाद में आर्य समाज के रूप में पूरे देश में फैली। आर्य समाज की धारण ने सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर प्रगतिशील विचारधारा को जन्म दिया जिसका भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन सहित सामाजिक स्वरूप पर भी व्यापक असर हुआ।

राष्ट्रीय चेतना को गति और ऊर्जा देने में स्वामी विवेकानंद का योगदान अतुलनीय है। अपनी अल्प आयु में ही उन्होंने देश के कोने–कोने में भ्रमण कर भारत की अस्मिता और उसके आध्यात्मिक स्वरूप और विविधता को समझा। स्वामीजी ने देश की नई पीढ़ी को जागरूक करने और वैदिक संस्कृति को स्थापित कर भारतीय चेतना को नवजीवन देने में अपना जीवन होम दिया। उन्होंने भारतीय वेदांत और मीमांसा की वह समीक्षा की जिससे अब तक विश्व अनजान था। स्वामी जी का शिकागो में दिया गया उद्‌बोधन जिसे उन्होंने "My American Brothers and Sisters" से प्रारंभ किया था, आज भी अविस्मरणीय है। उन्होंने इस तरह विश्व बंधुत्व और समग्रता की भारतीय परंपरा को सम्मानजनक वैश्विक आधार प्रदान किया। इसी दर्शन और जीवन पद्धति ने सारे विश्व में भारतीय संस्कृति की यश पताका फहराई। स्वामीजी ने करीब 84 ग्रंथों का सृजन किया जिसमें समग्र भारतीय चेतना और भारतीय दर्शन की वृहत मीमांसा निहित है।

आदिकाल से भारतीय संतों ने जहाँ ज्ञान और चेतना का प्रकाश फैलाया, वहीं शौर्य, वीरता और पराक्रम में उसकी प्रतिभा स्तुत्य है। महाभारत काल से लेकर भगवान परशुराम और देश पर आक्रमणकारियों का मुकाबला करने में संतों की अखाड़ा परंपरा अद्‌भूत पराक्रम का प्रतीक रही है। राष्ट्रीय

अस्मिता के संरक्षण और संवर्धन ने इस महायज्ञ में स्त्रियाँ भी कभी पीछे नहीं रही। महारानी कैकयी से लेकर लक्ष्मीबाई तक यह वही राष्ट्रीय चेतना थी जिन्होंने शौर्य और पराक्रम में विश्व में एक मिसाल स्थापित की। गुरू द्रोणाचार्य जैसे पराक्रमी संतों ने शिष्यों की वह परंपरा स्थापित की जो अन्याय और अत्याचार तथा अनाचार के विरोध में राष्ट्र की अस्मिता का संरक्षण करने में सतत् सफल रही।

निष्कर्ष

अनादिकाल से संतों का योगदान, ज्ञान, विज्ञान, शिक्षा, भौतिकी, रसायन, निर्माण, युद्धकला, तंत्र आदि विज्ञान के सूक्ष्म विषयों के संवर्धन और अन्वेषण में भी उल्लेखनीय है। अमेरिका इतिहासकार "Will Durant" (1888-1981) ने कहा है कि "India was the mother of our philosophy of much of our mathematics" शून्य की कल्पना भारतीय ज्ञान का ही उत्कर्ष है। ''पंच सिद्धांतिका'' (5^{th} Century A.D.) रेखा गणितीय के जटिल सिद्धांतों का ग्रंथ भारतीय संतों की ही खोज है। आर्यभट्ट, भास्कराचार्य (सिद्धान्त शिरोमणि) आदि संतो ने ज्ञान को केवल राष्ट्रीय बल्कि सार्वभौमिक पहचान दी है। खगोल शास्त्र और नक्षत्र विज्ञान में खोज करने वाले हमारे मनीषियों ने ''अणु'' पर आधुनिक विज्ञान की खोज के वर्षों पूर्व अपनी खोज स्थापित कर दी थी। परमाणु परम+अणु (Ultimate or beyond atom) कष्णव और पुरोधा (6^{th} Century) भौतिकी के विद्वान रहे है ये सभी संत परंपरा के ही विद्वान है। ऋषि चरक, च्यवन, पतांजलि, श्रुश्रुत आदि ऋषि चिकित्सा विज्ञान के अन्वेषक थे। जिन्होंने राष्ट्र के लिए जीवन दायिनी, पद्धतियाँ विकसित की। बराहगिरी, कपिल, पोलिनी, चाणवच, वात्स्यानन आदि ऋषियों ने अलग–अलग क्षेत्र में राष्ट्रकल्याण की भावना से ज्ञान की नई पंरपरायें स्थापित कीं।

भारत की संत परंपरा 'सर्व भवन्तुः सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः' के दैवीय चिंतन से ओतप्रोत रही है। क्षेत्रीयता और संप्रदाय की संकीर्णता से परे भारतीय मनीषी व्यापक अर्थों में सारी मानवता के लिए कल्याणकारी और मार्गदर्शक रहे है। भारतीय संत परंपरा की यह विशेषता ही सांस्कृतिक स्तर पर भारत को ''विश्व गुरू'' के रूप में पुनः स्थापित करने में सफल होगी।

संदर्भ

1. रामकृष्ण राव, वेनचुरी – प्रबुद्धा भारता, 103, 212–214, **(1998)**
2. Human values in National Development – Their Necessary and Importance. Dr. Siddhartha Ganguly, **100**, **(1995)**
3. Vedanta as Political Ideology, The passion of Vivekanand Prof. D. Prithipura, **100,** 106-113 **(1995)**
4. Glimpses of Swami Vivekanand ji's life in New York by Swami Tathagatananada, **104**, 349-356 **(1999)**
5. On Reincarnation 'Swami Ranganathananda, **105**, 152-154 **(2000)**